

30 अप्रैल 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

पर्यावरण:

1. अवर्गीकृत वन क्यों 'गायब' हो रहे हैं?

D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

E. संपादकीय:

**राज्यवस्था:**

1. ईवीएम-वीवीपैट मामले का फैसला निराशाजनक है:

**पर्यावरण:**

1. पोल्ट्री उद्योग को तत्काल सुधार की आवश्यकता है:

**F. प्रीलिम्स तथ्य:**

1. हिंद महासागर के गर्म होने की गति तेज होने वाली है: अध्ययन
2. बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं का असर निर्यात पर पड़ सकता है: FIEO
3. 'मजबूत सेवा निर्यात की कहानी को हल्के में न लें':

**G. महत्वपूर्ण तथ्य:**

**आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।**

**H. UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:**

**I. UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:**

**सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:**

अवर्गीकृत वन क्यों 'गायब' हो रहे हैं?

पर्यावरण:

विषय: पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण।

मुख्य परीक्षा: अवर्गीकृत वनों से सम्बन्धित मुद्दा।

प्रसंग:

- अवर्गीकृत वन, जिन्हें डीम्ड वन भी कहा जाता है, भारत में पारिस्थितिक संतुलन और जैव विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, इन वनों में अक्सर कानूनी सुरक्षा का अभाव होता है, जिससे वे शोषण और गैर-वन उद्देश्यों के उपयोग के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।

समस्याएँ:

- कानूनी सुरक्षा का अभाव: अवर्गीकृत वनों को अधिसूचित वनों के समान कानूनी सुरक्षा प्राप्त नहीं होती है, जिससे वे भूमि उपयोग परिवर्तन और क्षरण के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।
- पहचान में अनिश्चितता: आंकड़ों में विसंगतियों और उनकी पहचान और स्थान पर स्पष्टता की कमी के साथ, अवर्गीकृत वनों की स्थिति और विस्तार अनिश्चित रहा है।
- अपूर्ण रिपोर्ट: वन (संरक्षण) अधिनियम संशोधन ([Forest \(Conservation\) Act Amendment \(FCAA\) 2023](#)) 2023 द्वारा अनिवार्य राज्य विशेषज्ञ समिति (एसईसी) की रिपोर्ट में अवर्गीकृत वनों पर व्यापक डेटा का अभाव है, जिससे उनकी सटीकता और पर्याप्तता के बारे में चिंताएं बढ़ रही हैं।

महत्व:

- पारिस्थितिक महत्व: अवर्गीकृत वन भारत की जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जिसमें कार्बन पृथक्करण, जल विनियमन और वन्यजीवों के लिए आवास प्रावधान शामिल हैं।

- कानूनी सुरक्षा: अवर्गीकृत वनों की उचित पहचान और कानूनी मान्यता उनके संरक्षण और टिकाऊ प्रबंधन, उनके दीर्घकालिक पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक लाभों को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

#### समाधान:

- व्यापक सर्वेक्षण: राज्यों में वर्गीकृत वन क्षेत्रों की सटीक पहचान करने और उनका सीमांकन करने के लिए पूरी तरह से कैडस्ट्रल सर्वेक्षण (Cadastral survey) और जमीनी सत्यापन करना।
- एसईसी को मजबूत बनाना: यह सुनिश्चित करना कि राज्य विशेषज्ञ समितियों का गठन किया जाए और उन्हें अवर्गीकृत वनों पर उनके विस्तार, स्थान और पारिस्थितिक महत्व सहित विश्वसनीय डेटा एकत्र करने का अधिकार दिया जाए।
- पारदर्शिता और जवाबदेही: सार्वजनिक जांच और भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए पारदर्शी प्रक्रियाओं के साथ एसईसी रिपोर्टों को समय पर और सटीक रूप से प्रस्तुत करने के लिए अधिकारियों को जवाबदेह बनाना।

#### सारांश:

- अपर्याप्त सुरक्षा और अवर्गीकृत वनों की अनिश्चित स्थिति भारत की पर्यावरणीय स्थिरता और जैव विविधता संरक्षण प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती है। वन (संरक्षण) अधिनियम संशोधन (एफसीएए) 2023 के कार्यान्वयन के साथ-साथ इन वनों की पहचान, सुरक्षा और प्रबंधन को प्रभावी ढंग से करने के लिए मजबूत उपाय किए जाने चाहिए।

**संपादकीय-द हिन्दू**

संपादकीय:

ईवीएम-वीवीपैट मामले का फैसला निराशाजनक है:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

### राज्यवस्था:

विषय: भारत में चुनाव (Elections in India)

मुख्य परीक्षा: ईवीएम-वीवीपीएटी से सम्बन्धित मुद्दे।

### प्रसंग:

- सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (Electronic Voting Machines (EVMs) ) और वोटर वेरिफाइबल पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपीएटी) से संबंधित हालिया फैसले ने वीवीपीएटी-आधारित ऑडिट के लिए निर्धारित नमूना आकार की पर्याप्तता के बारे में महत्वपूर्ण चिंताएं बढ़ा दी हैं।
- ऐतिहासिक घटनाओं के साथ समानताएं बनाते हुए और सांख्यिकीय सिद्धांतों के महत्व पर जोर देते हुए, निर्णय की सीमाओं को प्रकाश में लाया गया है, जो चुनावी अखंडता सुनिश्चित करने के लिए और अधिक मजबूत दृष्टिकोण की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

### समस्याएँ:

- सांख्यिकीय अपर्याप्तता: वीवीपीएटी-आधारित ऑडिट के लिए निर्णय का निर्धारित नमूना आकार सांख्यिकीय नमूनाकरण सिद्धांत के मूलभूत सिद्धांतों का पालन करने में विफल रहता है, जिससे ईवीएम में संभावित खराबी या हेरफेर का पता लगाने में इसकी प्रभावकारिता पर संदेह पैदा होता है।
- अपारदर्शी प्रोटोकॉल: ईवीएम की 'जनसंख्या' की परिभाषा और निर्धारित नमूने के भीतर दोषपूर्ण ईवीएम की स्थिति में बाद के कदमों के बारे में स्पष्टता की कमी एक पारदर्शी और जवाबदेह ऑडिट प्रक्रिया सुनिश्चित करने में चुनौतियां पैदा करती है।

### महत्व:

- **चुनावी सत्यनिष्ठा:** लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए चुनावी प्रक्रियाओं की अखंडता सर्वोपरि है। जनता का विश्वास जगाने और चुनाव परिणामों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए ईवीएम के ऑडिट के लिए एक मजबूत और पारदर्शी प्रणाली आवश्यक है।
- **न्यायिक निरीक्षण:** चुनावी अखंडता की रक्षा करने और ईवीएम और वीवीपीएटी से संबंधित चिंताओं को संबोधित करने में सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका कानून के शासन को बनाए रखने और स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के लिए नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने की उसकी जिम्मेदारी को रेखांकित करती है।

### समाधान:

- **सांख्यिकीय रूप से सुदृढ़ दृष्टिकोण:** उच्च सटीकता के साथ बेमेल के मामलों का पता लगाने के लिए सांख्यिकीय रूप से सुदृढ़ वीवीपीएटी-आधारित ऑडिट प्रणाली को लागू करना महत्वपूर्ण है। चुनावी प्रक्रिया की अखंडता सुनिश्चित करने के लिए कठोर सांख्यिकीय सिद्धांतों पर आधारित 'अपवाद द्वारा प्रबंधन' दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** ऑडिट प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए ईवीएम की 'जनसंख्या' की परिभाषा को स्पष्ट करना और निर्धारित नमूने के भीतर दोषपूर्ण ईवीएम को संभालने के लिए स्पष्ट प्रोटोकॉल की रूपरेखा तैयार करना आवश्यक है। ऑडिट पद्धतियों और प्रक्रियाओं का सार्वजनिक प्रकटीकरण चुनावी प्रक्रिया में विश्वास और विश्वास को बढ़ावा दे सकता है।

### सारांश:

- ईवीएम और वीवीपैट पर निर्णय भारत के चुनावी शासन में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है, जो चुनावी अखंडता की सुरक्षा के लिए अधिक कठोर और पारदर्शी दृष्टिकोण की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। सांख्यिकीय सिद्धांतों को अपनाकर, ऑडिट प्रोटोकॉल में पारदर्शिता सुनिश्चित करके और न्यायिक निरीक्षण को कायम रखकर, भारत अपने लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत कर सकता है और स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के

मूलभूत सिद्धांतों को कायम रख सकता है।

पोल्ट्री उद्योग को तत्काल सुधार की आवश्यकता है:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

पर्यावरण:

विषय: पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण।

मुख्य परीक्षा: पोल्ट्री उद्योग में सुधारों का महत्व।

प्रसंग:

- पोल्ट्री उद्योग में H5N1 के हालिया प्रकोप ने भारत के पशुधन उत्पादन प्रथाओं में सुधार की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया है।
- तात्कालिक सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंताओं से परे, यह संकट पशु कल्याण, पर्यावरणीय स्थिरता और पोल्ट्री क्षेत्र के भीतर नियामक निरीक्षण से संबंधित व्यापक मुद्दों पर प्रकाश डालता है।

जैव सुरक्षा मुद्दे का पैमाना:

- ऐतिहासिक संदर्भ: पोल्ट्री उद्योग में H5N1 का प्रकोप 1997 में पहली बार सामने आने के बाद से एक बार-बार होने वाली वैश्विक चिंता का विषय रहा है। भारत में, रोगजनक की उपस्थिति 2006 में महाराष्ट्र में दर्ज की गई थी, जिसके बाद कई राज्यों में इसका प्रकोप हुआ। वायरस की प्रजातियों की बाधाओं को पार करने की क्षमता और इसकी संभावित घातकता मजबूत जैव सुरक्षा उपायों की आवश्यकता को रेखांकित करती है।
- पर्यावरणीय प्रभाव: औद्योगिक पशुधन उत्पादन प्रथाएं, जिनमें उच्च घनत्व वाले कारावास और अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन शामिल हैं, पर्यावरण प्रदूषण और सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिमों में योगदान करती हैं। पोल्ट्री इकाइयों का विनियामक सीमा से अधिक प्रसार हवा और पानी की गुणवत्ता संबंधी चिंताओं को और बढ़ा देता है, जिससे पर्यावरण नियामकों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा होती हैं।

### समस्याएँ:

- पशु कल्याण संबंधी चिंताएँ: औद्योगिक पोल्ट्री इकाइयों में पशुओं का गहन कारावास पशु कल्याण के संबंध में नैतिक और कानूनी प्रश्न उठाता है। भीड़भाड़, विकृति और रोगनिरोधी एंटीबायोटिक उपयोग जैसी प्रथाएं न केवल मौजूदा पशु कल्याण कानूनों का उल्लंघन करती हैं, बल्कि एंटीबायोटिक प्रतिरोध सहित सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिमों में भी योगदान करती हैं।
- पर्यावरणीय क्षरण: औद्योगिक पोल्ट्री इकाइयों में प्रचलित अस्वच्छ स्थितियों के परिणामस्वरूप अपशिष्ट उत्पादों का संचय होता है, जिससे आसपास के समुदायों के लिए पर्यावरणीय खतरे और स्वास्थ्य जोखिम पैदा होते हैं। अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएं प्रदूषण के स्तर को बढ़ाती हैं और रोगवाहकों के प्रसार में योगदान करती हैं, जिससे मानव और पारिस्थितिकी तंत्र दोनों के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है।

### महत्व:

- सार्वजनिक स्वास्थ्य निहितार्थ: पशु कल्याण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच अंतर्संबंध पोल्ट्री उद्योग के भीतर प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करने के महत्व को रेखांकित करता है।
- इन चिंताओं की उपेक्षा न केवल मानव स्वास्थ्य को खतरे में डालती है बल्कि पारिस्थितिक लचीलापन और जैव विविधता संरक्षण प्रयासों को भी कमजोर करती है।
- नियामक निरीक्षण: पर्यावरणीय कानूनों के अनुपालन को बढ़ावा देने और खेती वाले जानवरों के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए नियामक तंत्र और प्रवर्तन उपायों को मजबूत करना आवश्यक है।
- पोल्ट्री उद्योग के सामने आने वाली बहुमुखी चुनौतियों के समाधान के लिए पारदर्शी और जवाबदेह शासन ढाँचा आवश्यक है।

### समाधान:



- कानूनी सुधार: पोल्ट्री उद्योग में पशु कल्याण मानकों को बढ़ाने के लिए मौजूदा कानून, जैसे कि पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, को अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं और सिफारिशों के साथ जोड़ना महत्वपूर्ण है।
- एंटीबायोटिक के उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन और पशु देखभाल पर सख्त नियमों को लागू करने से सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिमों को कम किया जा सकता है और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- प्रवर्तन तंत्र: पर्यावरणीय नियमों और उद्योग मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए निगरानी और प्रवर्तन तंत्र को बढ़ाना आवश्यक है। गैर-अनुपालन के लिए नियमित निरीक्षण और दंड सहित औद्योगिक पोल्ट्री इकाइयों की सख्त निगरानी, अवैध प्रथाओं को रोक सकती है और सार्वजनिक स्वास्थ्य हितों की रक्षा कर सकती है।

**सारांश:**

- पोल्ट्री उद्योग में मौजूदा संकट व्यापक सुधारों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है जो पशु कल्याण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता की परस्पर जुड़ी चुनौतियों का समाधान करता है। नियामक निरीक्षण, कानूनी सुधार और प्रवर्तन तंत्र को प्राथमिकता देकर, भारत औद्योगिक पशुधन उत्पादन से उत्पन्न जोखिमों को कम कर सकता है और अधिक नैतिक, लचीला और टिकाऊ पोल्ट्री क्षेत्र को बढ़ावा दे सकता है।

**प्रिलिम्स तथ्य:****1. हिंद महासागर के गर्म होने की गति तेज होने वाली है: अध्ययन****प्रसंग:**

- हाल के अध्ययनों से समुद्री पारिस्थितिक तंत्र, मौसम के पैटर्न और तटीय समुदायों पर महत्वपूर्ण प्रभाव के साथ हिंद महासागर के गर्म होने की खतरनाक प्रवृत्ति का संकेत मिलता है।

- हिंद महासागर, जो वैश्विक जलवायु प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक है, ने पिछले दशकों में तापमान में पर्याप्त वृद्धि का अनुभव किया है, जिसके अनुमानों से आने वाले वर्षों में और तेजी आने का संकेत मिलता है।

### समस्याएँ:

- तीव्र तापन रुझान: वर्ष 1950 से 2020 तक, हिंद महासागर में तापमान में 1.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि देखी गई एवं जलवायु मॉडल 2100 तक 1.7 से 3.8 डिग्री सेल्सियस की और वृद्धि का अनुमान लगाते हैं।
- यह वार्मिंग प्रवृत्ति मुख्य रूप से ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार है और इसका समुद्री जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- समुद्री हीटवेवों का उद्भव: समुद्री हीटवेवों का प्रचलन, भूमि की हीटवेवों के समान, लेकिन समुद्र में होने वाली, नाटकीय रूप से बढ़ने की उम्मीद है। चक्रवातों (cyclones) के तीव्र निर्माण से जुड़ी इन हीटवेवों के प्रति वर्ष औसतन 20 दिनों से बढ़कर 220-250 दिनों तक बढ़ने का अनुमान है, जिससे समुद्री जीवन और मत्स्य पालन पर काफी प्रभाव पड़ेगा।
- गहन ताप प्रवेश: ताप सामग्री में वृद्धि की वर्तमान दर 4.5 ज़ेटा-जूल प्रति दशक मापी गई है, अनुमान के अनुसार भविष्य में प्रति दशक 16-22 ज़ेटा-जूल की वृद्धि का संकेत मिलता है।

### महत्व:

- पारिस्थितिकी तंत्र का प्रभाव: लगातार हीट वेव्स और बढ़ता तापमान समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है, जिससे मूंगा विरंजन, समुद्री घास का विनाश और समुद्री घास के जंगलों का नुकसान होता है। ये पारिस्थितिकीय व्यवधान मत्स्य पालन को अस्थिर कर सकते हैं और समुद्री संसाधनों पर निर्भर तटीय समुदायों के लिए खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल सकते हैं।

- मौसम चक्र: समुद्री हीट वेक्स की तीव्रता चक्रवातों के निर्माण, मौसम की चरम स्थितियों के बढ़ने और उष्णकटिबंधीय तूफानों की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि से जटिल रूप से जुड़ी हुई है। यह तटीय क्षेत्रों में आपदा तैयारियों और लचीलेपन के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करता है।
- समुद्र-स्तर में वृद्धि: हिंद महासागर की बढ़ती गर्मी की मात्रा थर्मल विस्तार के माध्यम से समुद्र के स्तर में वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जो ग्लेशियर (glaciers) और समुद्री-बर्फ के पिघलने के योगदान को बढ़ाती है। यह घटना तटीय कटाव, बाढ़ और खारे पानी की घुसपैठ को बढ़ाती है, जिससे तटीय आबादी और बुनियादी ढांचे की भेद्यता बढ़ जाती है।

## 2. बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं का असर निर्यात पर पड़ सकता है: FIEO

### प्रसंग:

- फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (FIEO) ने बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं, विशेष रूप से भू-राजनीतिक तनाव और भारत के निर्यात पर उनके संभावित प्रभाव पर चिंता व्यक्त की है।
- रूस-यूक्रेन संघर्ष (Russia-Ukraine conflict) जैसी घटनाओं से बढ़ी इन अनिश्चितताओं ने पिछले वित्तीय वर्ष में भारत के आउटबाउंड शिपमेंट को पहले ही प्रभावित कर दिया है, जिससे निर्यात हितों की सुरक्षा के लिए सक्रिय उपायों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

### समस्याएँ:

- दुनिया भर में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, विशेष रूप से रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष ने वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण अनिश्चितताएं ला दी हैं। ये अनिश्चितताएं वैश्विक मांग की गतिशीलता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती हैं, जिससे भारतीय निर्यात की मांग संभावित रूप से कम हो सकती है।
- निर्यात प्रदर्शन पर प्रभाव: भू-राजनीतिक संघर्षों से जुड़ी अनिश्चितताएं वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए भारत के निर्यात आंकड़ों में पहले ही प्रकट हो चुकी हैं, आउटबाउंड शिपमेंट (अन्य देश को

जाने वाले) में 3.11% की उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। यह गिरावट निर्यातकों को अस्थिर अंतरराष्ट्रीय बाजारों से निपटने में आने वाली चुनौतियों को दर्शाती है।

- वित्तीय सम्भावनाएं: निर्यात मात्रा पर प्रत्यक्ष प्रभाव के अलावा, भू-राजनीतिक अनिश्चितताएं भी निर्यातकों के लिए वित्तीय चुनौतियों का कारण बन सकती हैं। माल ढुलाई दरों में उतार-चढ़ाव और मुद्रा मूल्यहास जैसे कारक अतिरिक्त बाधाएं पैदा करते हैं, जिससे निर्यातकों के लिए तरलता और वित्तीय सहायता बढ़ाने के उपायों की आवश्यकता होती है।

#### **महत्व:**

- आर्थिक भेद्यता: भारत का निर्यात क्षेत्र आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निर्यात प्रदर्शन में किसी भी व्यवधान या मंदी का देश की समग्र आर्थिक स्थिरता और लचीलेपन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता: बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच, निर्यात बाजारों में प्रतिस्पर्धा बनाए रखना भारतीय निर्यातकों के लिए अनिवार्य हो गया है। उभरती वैश्विक गतिशीलता के बीच भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने और बाजार हिस्सेदारी बनाए रखने के लिए प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप और समर्थन तंत्र आवश्यक हैं।

#### **3. 'मजबूत सेवा निर्यात की कहानी को हल्के में न लें':**

#### **प्रसंग:**

- गोल्डमैन सैक्स ने भारत के सेवा निर्यात के लिए एक आशाजनक प्रक्षेपवक्र का अनुमान लगाया है, जिसमें 2030 तक 800 बिलियन डॉलर की पर्याप्त वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। हालाँकि, इस आशावादी दृष्टिकोण के बीच, बेंगलुरु जैसे प्रमुख केंद्रों में कुशल प्रतिभा की कमी और संसाधन तनाव जैसी चुनौतियों के बारे में चिंताएँ व्यक्त की गई हैं।

- हालांकि भारत के सेवा निर्यात में हाल के वर्षों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, अंतर्निहित बाधाओं को दूर करने और विकास की गति को बनाए रखने के लिए सक्रिय उपायों की आवश्यकता पर जोर देते हुए, आत्मसंतुष्टि के प्रति सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है।

### समस्याएँ:

- कुशल प्रतिभा की कमी: सेवा निर्यात में मजबूत वृद्धि के बावजूद, कुशल प्रतिभा की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। उद्योग की आवश्यकताओं और प्रौद्योगिकी स्नातकों के कौशल के बीच का अंतर एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है, जो सेवा क्षेत्र में भारत की निर्यात क्षमता की पूर्ण प्राप्ति में बाधा बन रहा है।
- प्रमुख केंद्रों में संसाधन तनाव: संसाधन तनाव, विशेष रूप से बेंगलुरु जैसे शहरों में स्पष्ट, सेवा निर्यात में निरंतर वृद्धि के लिए खतरा है। तेजी से शहरीकरण और औद्योगिक विस्तार के कारण बेंगलुरु में जल संकट गहरा गया है, जो भारत के सेवा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण केंद्रों की कमजोरी को उजागर करता है।
- आर्थिक योगदान: सेवा निर्यात भारत के आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि, रोजगार सृजन और चालू खाता स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान देता है। 2030 तक सेवा निर्यात में अनुमानित \$800 बिलियन का लक्ष्य हासिल करने से भारत की आर्थिक लचीलापन और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में और वृद्धि होगी।
- चालू खाता स्थिरता: गोल्डमैन सैक्स के अनुमानों से पता चलता है कि सेवा निर्यात में मजबूत वृद्धि 2024 और 2030 के बीच चालू खाता घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के औसतन 1% तक सीमित करने में मदद कर सकती है। यह व्यापक आर्थिक स्थिरता और बाहरी संतुलन बनाए रखने में सेवा निर्यात में निरंतर वृद्धि के महत्व को रेखांकित करता है।

### महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

**प्रश्न 1. वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (VVPAT) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. यह एक स्वतंत्र सत्यापन प्रिंटर मशीन है और इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों से जुड़ी होती है।
2. यह मतदाताओं को यह सत्यापित करने की अनुमति देता है कि उनका वोट इच्छित उम्मीदवार को गया है या नहीं।
3. वीवीपैट के माध्यम से मुद्रित कागज़ की पर्ची में मतदाता का चुनाव चिन्ह और नाम होता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

**उत्तर: b**

**व्याख्या:**

- कथन 3 ग़लत है। वीवीपैट पर्ची में उम्मीदवार का चुनाव चिन्ह और नाम होता है।

**प्रश्न 2. H5N1 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. H5N1 एक प्रकार का इन्फ़्लूएंजा वायरस है जो पक्षियों में अत्यधिक संक्रामक, गंभीर श्वसन रोग का कारण बनता है।
2. H5N1 के मानव मामले छिटपुट रूप से होते हैं, जिनमें तेजी से मानव-से-मानव संचरण होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से ग़लत है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

**उत्तर: b**

**व्याख्या:**

- कथन 2 गलत है। H5N1 एवियन इन्फ्लूएंजा के मानव मामले कभी-कभी (छिटपुट रूप से) होते हैं, जिससे मानव-से-मानव संचरण में कठिनाई होती है।

**प्रश्न 3. टी.एन. गोदावर्मन थिरुमुलपाद बनाम भारत संघ केस (1996) के अनुसार, "वन" में शामिल हैं:**

1. सभी क्षेत्र किसी भी सरकारी (संघ और राज्य) रिकॉर्ड में "वन" के रूप में दर्ज हैं।
2. वे सभी क्षेत्र जो जंगल के "शब्दकोश" अर्थ के अनुरूप हैं।
3. सर्वोच्च न्यायालय की एक विशेषज्ञ समिति द्वारा इस क्षेत्रों को "वन" के रूप में पहचाना गया है।

निम्नलिखित कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

**उत्तर: c**

**व्याख्या:**

- टी.एन.गोदावर्मन थिरुमुलपाद बनाम भारत संघ केस (1996) के अनुसार 'वन' में दी गई सभी तीन परिभाषाएँ शामिल हैं।

**प्रश्न 4. हाल ही में समाचारों में देखे गए 'चांग'ई 6' (Change-6) के संबंध में इनमें से कौन सा/से कथन सही है/हैं?**

1. यह एक लैंडर है जिसे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव से नमूने वापस लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
2. चांग'ई 6 में लैंडर और रोवर दोनों शामिल होंगे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2



- (c) 1 और 2 दोनों  
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: c

व्याख्या:

- दोनों कथन सही हैं।

**प्रश्न 5. केल्व वनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. केल्व गर्म पानी में पनपता है।
2. वे समुद्र तल से जुड़ होते हैं और अंततः पानी की सतह पर बढ़ते हैं और भोजन और ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए सूर्य के प्रकाश पर निर्भर होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने गलत हैं/हैं?

- (a) केवल 1  
(b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों  
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: a

व्याख्या:

- कथन 1 गलत है। केल्व ठंडे, पोषक तत्वों से भरपूर पानी में पनपता है।

UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

**प्रश्न 1. चीन से आयात पर भारत की बढ़ती निर्भरता के निहितार्थों की जाँच कीजिए। इस प्रवृत्ति से जुड़े रणनीतिक जोखिमों पर चर्चा करें और साथ ही घरेलू औद्योगिक क्षमताओं को बढ़ाते हुए भारत के व्यापार घाटे को कम करने के उपाय सुझाएं। (250 शब्द, 15 अंक) (सामान्य अध्ययन - II, अंतर्राष्ट्रीय संबंध) (Examine the implications of India's increasing dependency on imports from China. Discuss the strategic risks associated with this trend and suggest measures for reducing India's trade deficit while enhancing domestic industrial capabilities. (15 marks, 250 words) [GS-3, Economy])**



**प्रश्न 2. भारत की आर्थिक और वित्तीय स्थिरता के लिए जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने में भारतीय रिज़र्व बैंक की भूमिका की जाँच कीजिए। साथ ही आरबीआई द्वारा किए गए उपायों पर चर्चा करें और जलवायु संबंधी आर्थिक व्यवधानों के खिलाफ देश की लचीलापन बढ़ाने के लिए आवश्यक आगे की कार्रवाइयों का सुझाव दें। (250 शब्द, 15 अंक) (सामान्य अध्ययन - III, अर्थव्यवस्था) (Examine the role of the Reserve Bank of India in addressing the challenges posed by climate change to India's economic and financial stability. Discuss the measures undertaken by the RBI and suggest further actions needed to enhance the country's resilience against climate-related economic disruptions. (15 marks, 250 words) [GS-3, Economy])**

(नोट: मुख्य परीक्षा के अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों पर क्लिक कर के आप अपने उत्तर **BYJU'S** की वेब साइट पर अपलोड कर सकते हैं।)